पञ्चमः पाठः

यक्ष–युधिष्ठिर–संवादः

प्रस्तुत अवतरण महाभारत' से लिया गया है जिसके रचयिता महर्षि वेदव्यास जी हैं महाभारत एक लाख श्लोकों में निबद्ध है। अतः इसे ''शत–साहस्री–संहिता'' भी कहते है। एक बार अज्ञात वास के समय घूमते हुए पाण्डवों को प्यास लगी। तब नकुल जल का तलाश करते हुए एक जलाशय के पास पहुँचे किन्तु यक्ष ने पानी पीने से मना कर दिया। उन्होंने कहा–मेरे प्रश्नों के उत्तर देने के पश्चात् ही पानी पी सकते हैं। पिपासाकुल नकुल एवं अन्य भाई बिना उत्तर दिये पानी पीये और मृत्यु को प्राप्त हुए। युधिष्ठिर ने धैर्यपूर्वक यक्ष के प्रश्न का उत्तर दिया। प्रस्तुतांश में यक्ष के प्रश्न और उत्तर युधिष्ठिर के हैं। सभी प्रश्नोत्तर लोकोपयोगी है।

1. केनस्विच्छ्रोत्रियो भवति केनस्विद्विन्दते महत्।
   केनाद्वितीयवान्भवति राजन् केन च बुद्धिमान्।।

2. श्रुतेन श्रोत्रियो भवति तपसा विन्दते महत्।
   धृत्या द्वितीयवान्भवति राजन् बुद्धिमान्वृद्धसेवया।।

3. किंस्विद् गुरूतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्।
किस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद् बहुतरं तृणात्।।

4. मातागुरूतराभूमेः खादप्युच्चतरः पिता।
मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्।।

5. धन्यानामुत्तमं किंस्विद्धनानां स्यात्किमुत्तमम्।
लाभानामुत्तमं किं स्यात्सुखानां स्यात्किमुत्तमम्।।

6. धन्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लाभानामुत्तमं श्रेयः सुखानां तुष्टिरूत्तमा।।

7. केनस्विदावृत्तो लोकः केनस्विन्न प्रकाशते।
केन त्यजति मित्राणि केन स्वर्गं न गच्छति।।

8. अज्ञानेनावृत्तो लोकस्तमसा न प्रकाशते।
लोभात् त्यजति मित्राणि सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति।।

9. तपः किं लक्षणं प्रोक्तं को दमश्च प्रकीर्तितः।
क्षमा च का परा प्रोक्ता का च ह्री परिकीर्तिता।।

10. तपः स्वधर्मवर्तित्वं मनसो दमनं दमः।
क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्वं ह्रीरकार्यनिवर्तनम्।।

शब्दार्थाः

केनस्वित्	=	किसके द्वारा
विन्दते	=	प्राप्त करता है।
श्रुतेन	=	वेद से
श्रोत्रियः	=	वेदों का विद्वान
धृत्या	=	धैर्य से
गुरूतरम्	=	बढ़कर
उच्चतरम्	=	ऊँचा
खात्	=	आकाश से
बहुतरम्	=	बहुतायत
दाक्ष्यम्	=	कुशलता (चतुराई)
श्रेयः	=	कल्याण
प्रोक्तम्	=	कहा गया
दमः	=	दमन
ह्री	=	लज्जा
द्वंद्वसहिष्णुत्वम्	=	सुख दुख, लाभ–हानि आदि में सम।
अकार्यनिवर्तनम्	=	न करने योग्य कार्य को त्याग देना।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम्मुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) केन श्रोत्रियो भवति?

(ख) खादप्युच्चतरः कः?

(ग) लाभानामुत्तमं किम्?

(घ) केन न प्रकाशते?

(ङ) तपसः किं लक्षणम्?

2. रिक्तस्थानानि पूरयत –

(माता, धन्यानाम्, सुखानाम्, दमनम्, लोभात्)

1. .....त्यजति मित्राणि।

2. .....गुरूतरा भूमेः।

3. .....उत्तमं दाक्ष्यम्।

4. .....तुष्टिरूत्तमा।

5. मनसो .....दमः।

3. संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत–

1. वेद के अध्ययन से जीवन का ज्ञान होता है।
2. माता भूमि से बढ़कर है।
3. वायु से शीघ्रतर मन होता है।
4. लोभ से मित्र को त्याग देता है।
5. अज्ञान से संसार आवृत्त है।

4. सुमेलनं कुरुत –

खण्ड 'अ'	खण्ड 'ब'
1. माता	बहुतरी तृणात्
2. मनः	शीघ्रतरं वातात्
3. चिन्ता	गुरूतरा भूमेः
4. तुष्टिः	लोभात्यजति
5. मित्राणि	सुखानाम् उत्तमा

5. अधोलिखितानां श्लोकानां माध्यमेन निर्देशानुसारमुत्तराणि लिखत–

''अज्ञानेनावृत्तो लोकस्तमसा न प्रकाशते।
लोभात्त्यजति मित्राणि सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति।।

तपः स्वधर्मवर्तित्वं मनसो दमनं दमः।
क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्वं ह्रीरकार्यनिवर्तनम्।।''

प्रश्नाः –

अ. 1. केनावृत्तो लोकः?

2. परा क्षमा का प्रोक्ता?

ब. रेखाङ्कित पदानां मूलशब्द–विभक्ति–वचनानि च लिखत–

स. 'प्रकाशते' इति शब्दस्य व्युत्पतिं (उपसर्गमूलधातुः धातुरुपञ्च) लिखत।

द. हिन्दी–भाषया अनुवादं कुरुत।

1. सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति।

2. ह्रीरकार्यनिवर्तनम्।

–––––000–––––

R22XPU